مسائل مهمة في العقيدة الإسلامية

इस्लामी अक़ीदह
के
कुछ अहम मसायल

लेखक

शैख़ मुहम्मद जमील ज़ैनु

अनुवादक

अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالأحساء

अल्-अहसा इस्लामिक सेंटर होफूफ

p.o.Box 2022 अल्-अहसा 31982

फोन नः03-5866672फ़ेक्स नः5874664 सऊदी अरब

अर्ज़-ए-नाशिर

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين...أما بعد

यह एक मुसल्लमा हक़ीक़त है कि बग़ैर अक़ीदा-ए-तौहीद के कोई भी शख़्स इस रू-ए-ज़मीन पर ज़िन्दगी गुज़ारते हुए फ़लाह-व-कामियाबी की मन्ज़िल तय नहीं कर सकता है और न ही वह दुनिया-व-आख़िरत में सआदत-मन्द हो सकता है, और न ही उसे दुनिया की ज़िल्लत-व-रुसवाई और आख़िरत के अज़ाब से निजात मिल सकती है इस लिए हर इन्सान के लिए बेहद ज़रूरी है कि वह सब से पहले अक़ीदा की मारिफ़त हासिल करे और अपने अक़ीदा की इस्लाह करे।

अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने इसी अक़ीदा-ए-तौहीद (तौहीद-ए-इबादत) की वज़ाहत और उसकी दावत के लिए रसूल भेजे और किताबें नाज़िल फ़रमाईं। इरशाद-ए-बारी तआला है:

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولاً أَنِ اعْبُدُواْ اللّهَ وَاجْتَنِبُواْ الطَّاغُوتَ

(अन-नहल:36)

[हम ने हर उम्मत में रसूल भेजा कि लोगो! सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो और उसके सिवा तमाम माबूदों से बचो]

दूसरी जगह फ़रमाया:

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ

(अल-अम्बिया:25)

[आप से पहले भी जो रसूल हम ने भेजा उसकी तरफ़ वहि नाज़िल फ़रमाई कि मेरे सिवा कोई माबूद-ए-बरहक़ नहीं, पस तुम सब मेरी इबादत करो]

मालूम हुआ कि यही वह अक़ीदा-ए-तौहीद है जिस की जानिब तमाम अम्बिया-ए-कराम علیہم السلام ने अपनी अपनी क़ौमों को दावत दी और ख़ुद नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने शहर-ए-मक्का में मक्की ज़िन्दगी के शुरू के दस साला दौर में इसी अक़ीदा-ए-तौहीद की दावत कुफ़्फ़ार-ए-मक्का को दी, इस से पहले कि दिगर अहकाम की फ़र्ज़ियत हो और आप صلی اللہ علیہ وسلم की दावत सिर्फ़ एक ही कलेमा पर मुशतमिल थी:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قُولُوا لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ تُفْلِحُوا

(मुसतदरक हाकिम:1/39)

[ऐ लोगो तुम लाइलाहा इल्लल्लाह के क़ायल हो जाओ कामयाब हो जाओगे]

लेहाज़ा एक इन्सान को जो दावत इल-ल्लाह के फ़राइज़ अनजाम दे रहा हो उसे सुन्नत-ए-रसूल صلی اللہ علیہ وسلم की इत्तेबा-व-पैरवी करते हुए सब से पहले तौहीद (तौहीद-ए-उलूहियत) की दावत लोगों को देनी चाहिए।

क्यूँ कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने मआज़ बिन जबल رضي الله عنه को यमन दावत-व-तबलीग़ की ग़रज़ से भेजा और उन्हें यह हुक्म दिया कि तुम अहल-ए-किताब के पास जा रहे हो उन्हें सब से पहले अल्लाह की वहदानियत की दावत पेश करना। (बुख़ारी:७३७२)

अक़ीदा-ए-तौहीद की शिर्क से सलामती और हिफ़ाज़त की बुनियाद पर ही इन्सान के आमाल-ए-सालिहा के क़बूल होने का दार-व-मदार है। इरशाद-ए-बारी तआला है:

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

(अल-ज़ुमर:56)

[यक़ीनन तेरी तरफ़ और तुझ से पहले तमाम नबियों की तरफ़ वहि की गई है कि अगर तू ने शिर्क किया तो बिला शुबहा तेरा अमल बरबाद हो जायेगा और ज़रूर तू ख़सारा पाने वालों में से हो जायेगा।

अक़ीदा-ए-तौहीद की अहमियत इस से भी वाज़ेह होती है की अल्लाह के रसूल ﷺ मरज़ु-ल-मौत में मुब्तला हैं और उस आख़िरी वक़्त में फ़रमाते हैं:

إِشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى قَوْمٍ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَاءِهِمْ مَسَاجِدَ

(मोअत्ता:2/419)

[अल्लाह की सख़्त नाराज़गी हो ऐसे लोगों पर जिन्हों ने अपने नबियों की क़ब्रों को सजदा-गाह बना लिया]

लेकिन अफ़सोस सद-अफ़सोस कि आज कितने ऐसे कलेमा-गो मुसलमान हैं जो शिर्क के दलदल में फंसे हुए हैं चुनाँचे देखा जाए तो वह मुसीबतों में ग़ैरु-ल्लाह की दुहाई देते हैं, उन्हें मुश्किल-कुशा और हाजत-रवा समझते हैं, और पीरों और वलियों की क़ब्रों और मज़ारों पर जा कर अपनी पेशानी को टेक देते हैं, उन के लिए नज़्र-व-नियाज़ पेश करते हैं और उन क़ब्रों का तवाफ़ भी कर गुज़रते हैं और इसे असल दीन समझते हैं जब कि यह तमाम चीज़ें शिर्क-ए-अकबर के क़बील से हैं जिन के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ

(अल-मायदा:72)

[यक़ीन मानो कि जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है अल्लाह तआला ने इस पर जन्नत हराम कर दी है उसका ठिकाना जहन्नम ही है और गुनहगारों की मदद करने वाला कोई नहीं होगा।

यह किताब (इस्लामी अक़ीदा के कुछ अहम मसायल) जो अक़ीदा के बाज़ अहम मसाइल पर मुशतमिल है, जिसे शैख़ मुहम्मद बिन जमील ज़ेनू حفظه الله ने सवाल-व-जवाब की शकल में निहायत ही आम फ़हम उस्लूब में तर्तीब दी है, इसका हिन्दी तर्जुमा शैख़ अताउर्रहमान सईदी ने किया है , अल्लाह तआला उन्हें जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाए।

इस किताब की छपाई हिन्दुसतान में और हिन्दुसतान के बाहर भी कई बार हो चुकी है लेकिन मज़ीद फ़रमाइश और लोगों के फ़ायदे के लिए एक साहिब-ए-ख़ैर के ख़र्चे पर (जिन्हें अल्लाह तआला अज्र-ए-जज़ील से नवाज़ते हुए शिफ़ा-ए-कामिल अता कर के उनकी उमर में बरकत अता फ़रमाए, आमीन-तक़ब्बल या रब्ब-ल-आलमीन) इसे अब **दारुल-ख़ैर फ़ाउन्देशन** कौसा मुंब्रा से छापा जा रहा है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह तमाम मोमिनों को इस से भरपूर फ़ायदा उठाने की और ख़ास तौर पर हमारे उन भाइयों को जिन के अक़ीदे में किसी भी क़िस्म की कजी हो उस की उन्हें इस्लाह की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए-आमीन

नीज़ किताब की तबाअत में जिन भाइयों का भी माद्दी व मानवी या जिस भी तरह का तआउन रहा हो, अल्लाह तआला उन तमाम को जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाए।

शमीम अहमद अब्दुल हलीम मदनी

कौसा, मुंब्रा

मार्च 2015

भूमिका

भूमिका अनुवादक

الحمد لله رب العالمين والعاقبة للمتقين والصلاة والسلام على
أشرف الأنبياء والمرسلين محمد صلى الله عليه وسلم وعلى آله
وأصحابه الطيبين الطاهرين ومن تبعهم بإحسان الى يوم الدين وبعد.

अल्लाह तआ़ला ने सारे मुसलमानों को मुकम्मल तौर से इस्लाम में दाखिल होने का आदेश देते हुए मलऊन शैतान की ताबेदारी से मना फर्माया है।

अल्लाह तआ़ला फरमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا
خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ

[बक़रा-208]

(ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे तौर से दाखिल हो जाओ और शैतान के रास्ते पर न चलो वह तुम्हारा खुला दुश्मन है)

तथा अल्लाह तआ़ला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन ही में इस्लाम धर्म को मुकम्मल करके मुसलमानों पर एक बड़ा एहसान किया है।

अब इसमें किसी प्रकार की कमी या बेशी नहीं की जा सकती।

यह बात हर मुस्लमान अच्छे प्रकार जानता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दीन की सारी बातें उम्मत तक बिना किसी कमी व बीशी (अधिक) के पहुँचाया और उम्मत को एक रोशन ताथ उज्जवल मार्ग पर छोड़ा आप के देहांत के बाद सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हम खालिस इस्लाम धर्म पर क़याम रहे परन्तु जैसे जैसे लोग रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से दूर

होते गऐ सत्य मार्ग़ से हटते गऐ यहाँ तक कि कुछ लोगों ने धार्मिक बातों मे वह गुल खिलाऐ कि कुछ इन्सानी समाज में दीन का असल चेहरा ही मिट गया । खास कर इस्लामी अक़ीदह में लोगों ने इस प्रकार शिर्क तथा कुफ्र की बातें दाखिल कर दिऐ कि बहुत से मुसलामान उसी के शिकार होकर रह गऐ बल्कि केवल उसी को दीन समझने लगे । जबकि इबादात के कुबूल होने की शर्तों में से अक़ीदह का सही होना है । अतः इस्लामी अक़ीदह में कमी पाऐ जाने की सूरत में कोई भी अमल कुबूल न होगा । आज उम्मत में नाना प्रकार के शिर्क और कुफ्र से भरे हुऐ ऐसे ऐसे अक़िदे रायज तथा प्रचलित हैं कि कुरआन और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस की रोशनी में उनका करने वाला इस्लाम से बारह हो जाता है । लोगों ने नबियों और रसूलों, फरिश्तों तथा वलियों,अपने मनमानी पीरों को

अपनी अपनी इबादतों में अललाह तआ़ला का स्थान दे रखा है ।बलिक अल्लाह के बजाऐ गैरूल्लाह को परेशानी दूर करने वाला ज़रूरत पूरी करने वाला,अवलाद एवं संतान देने वाला, मुसीबतैं दूर करने वाला आदि समझ कर या वली अलदद يا ولي المدد या ग़ौस अल्मदद يا غوث المدد ,या पीराने पीर दस्तगीर अल्मदद (हे वली मदद करो,हे गौस मदद करो आदि),जैसे शिर्क से भरे शब्दों द्वारा गैरूल्लाह की दुहाईयाँ देते हैं । मज़ारों तथा समाधियों पर मज़ार वालों की कुरबत और नज़दीकी हासील करने के लिऐ या उनको अल्लाह तक वसीला तथा वासता बनाने के लिऐ जानवर ज़बह करना,चादर चढ़ाना,नज़र व नियाज़ करना,तवाफ करना, कबरों पर सजदे करना और फूल चढ़ाना आम रिवाज तथा पध्यति बन गया है । आज मस्जिदें वीरान और गैर मुस्लिमों के स्थानो के प्रकार मज़ारें आबाद हैं ।

अफसोस रे अफसोस! जिस प्रकार गैर मुस्लिमों के जितने कंकड़ उतने शंकर हैं उसी प्रकार नाम के मुसलमानों के यहाँ भी उतने मज़ार और दरगाह मौजूद है।

जहाँ पर बड़ी ही बेशरमी और ढ़िठाई के साथ गैरूल्लाह के सामने इबादतें अदा की जाती हैं। और इसी को आज का गैर मुस्लिम अपने आप को सत्य पर होने का लूली लेंगड़ी तर्क बनाता है जिसको एक कवि ने (गैर मुस्लिम बनाम मुस्लिम कौम)के उनवान से कहते हुए अफसोस किया है। लाभ के लिये हम निन्म में माहानामह निवाऐ इस्लाम देहली शुमारः नम्बर-दिसम्बर 2003के हवाला से लिख रहे है!

एक ही प्रभू की पूजा हम अगर करते नहीं
एक ही दरगाह पर सिर आप भी रखते नही
अपना सजदह गाह देवी का अगर स्थान है
आप के सजदों का मरकज़ भी तो क़ब्रस्तान है
अपने देवताओं की गिन्ती हम अगर रखते नहीं

आप भी मुश्किल कुशाओं को तो गिन सकते नहीं
जितने कंकर उतने शंकर यह अगर मशहूर है
जितने मुर्दे उतने सजदे आप का दस्तूर है
अपने देवी देवताओं को है गर कुछ इखतियार
आप के वलियों की ताक़त का नहीं है कुछ शुमार
वक़्त मुशकिल का है नअ़रह अपना बजरंगेबली
आप को देखा लगाते नारऐ हैदर अ़ली
लेता है अवतार परभू अपना तो हर देश मे
आप ने समझा खुदा को मुस्तफा के भेस में
जिस तरह हम बजाते मंदिरों मे घंटियाँ
तुरबतों पर आप को देखा बजाते तालियों
हम भजन करते है गा कर देवता की खूबियाँ
आप भी क़बरों पे गाते झूम कर क़व्वालियाँ
हम चढ़ाते हैं बुतों पर दूध या पानी का धार
आप को देखा चढ़ाते सब्ज़ चादर शानदार
बुत की पूजा हम करें हम को मिले नारे सक़र
आप क़बरों पर झुकें क्योंकर मिले जन्नत में घर
आप मुशरिक हम भी मुशरीक मामिला जब साफ है
जन्नती तुम,दोज़खी हम,यह कोई इन्साफ है?
हम भी जन्नत में रहें गे तुम अगर हो जन्नती
वरना दोज़ख मे हमारे साथ होंगे आप भी

मेरे मुस्लिम भाईयों ! अल्लाह की क़दर एंव अनुमान तथा रुतबे को पहचानो । जिस प्रकार अल्लाह अकेला हम सब का खालिक़, मालिक, राज़िक़ है इस में उसका कोई शरीक तथा साझी दार नहीं है इसी प्रकार अल्लाह ही अकेला हमारी सारी इबातों का हक़दार भी है उसकी इबादत में कोई शरीक नही । इस लिए अल्लाह के साथ किसी को भी शरीक करने से बचो ।

यह पुस्तक अरबी भाषा मे शैख़ मुहम्मद जमील ज़ैनू अध्यापक दारुल हदीस मक्का मुकर्रमा ने लिखा है जिसको मैं ने उम्मत के लाभ के लिए उर्दू में अनुवाद किया है और अन्त में इस्लाम से बाहर करदेने वाले कामों को लिख दिया है जिसका मक़सद केवल उम्मत तक अल्लाह का संदेश पहुँचाकर अल्लाह की रिज़ा जोई तथा प्रसन्नता प्राप्त करना है । बहुत सारे उर्दू पढ़ने वाले लोगों की बार बार अपीनी एवं अनुरोध

था कि यह पुस्तक बहुत ही लाभदायक है इस लिये इसका सरल हिन्दी में भी जरूर अनुवाद किया जाये,अपने पास समय की कमी के कारण यह काम मैंने अपने बड़ी बेटी **खौलह सलफी** पर डाल दिया अल्हमदुलिल्लाह उन्हों ने इसे उर्दू से सरल हिन्दी भाषा में लिखने की कोशिश की है, जिसमें वह बहुत सफ़ल हैं अल्लाह पाक उन्हें इसका अच्छा फल दे और जीवन के हर नेक काम में उन्हें सफल करे,हर पाप तथा हानि से दूर रखे,उनकी इस मेहनत को कुबूल कर ले आमीन ।

अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला इस काम को लेखक अनुवादक और हमारे माता पिता तथा सन्तान के लिए नर्क से मुक्ति का साधन बनाए और इस किताब के पढ़ने वालों को पूरा पूरा लाभ पहुँचाए आमीन ।

मैं अल्लाह का बहुत ही आभारी हूँ कि उस ने मुझेइस शुभ कार्य की तौफीक़ बखशी खास कर

अपने दुयालू माता पिता और प्यारे बड़े भाईयों का जिन्हों ने मुझे दीनी तालीम व तरबियत देने में कोई कमी नहीं की अल्लाह तआला उनके इस अच्छे कर्म को कुबूल करके उन्हें अच्छा फल दे और हमारे उन सारे अध्यापकों को संसार तथा आखिरत मे भलाई दे जिन लोगों ने हमारी तालीम एवं तरबियत मे अंथक मेहनत की और अल्लाह की तौफीक़ से हमको इस लायक़ बनाया कि हम कुझ लिख पढ़ सकें फजज़ाहुमल्लाहु खैरलजज़ ।

अन्त में मैं इस किताब के पढ़ने वालों से आशा करता हूँ कि अगर किसी प्रकार आप को इस में कोई कमी मिले तो आवश्य बतायें ताकि उसे सुधारा जा सके मैं आपका आभारी हूँ गा ।

आप का शुभेच्छुक
अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी
15रमज़ान 1433हिजरी¶3अगसत2012

मनुष्यों के पैदा करने का मक़्सद तथा उद्देश्य

प्रश्नः 1- अल्लाह पाक ने हमें क्यों पैदा किया?

उत्तरः 1- अल्लाह ने हमें पैदा किया ताकि हम केवल उसी की इबादत करें तथा उसके साथ कुछ भी शरीक एवं भागीदार न करें। अल्लाह ताला ने फरमाया हैः

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ [ज़ारियात : 56]

(मैंने जिन्नात और इंसान को इसीलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें)

तथा रसूल ﷺ ने फर्मायाः

[حقّ الله على العباد أن يعبدوه ولا يُشركوا به شيئًا]

(बन्दों पर अल्लाह का हक़ एवं अधिकार यह है कि वे केवल उसी की इबादत करें और उसके साथ कुछ भी साझीदार न करें) मुत्तफ़क अलैह

प्रश्न 2: इबादत किसे कहते हैं?

उत्तर 2: इबादत हर उस बाहरी व भीतरी बात और अमल का मुकम्मल (व्यापी) नाम है जिसे अल्लाह पाक पसन्द करे जैसे दुआ़, सलात (नमाज़) खुशू (भय) और खुजू (विनीति) आदि ।

अल्लाह पाक ने फर्माया :

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

(आप कह दीजिए कि बेशक मेरी नमाज़,और मेरी सभी इबादतें और मेरी ज़िन्दगी और मौत सारे संसार के रब अल्लाह के लिए है) सूरह अंआम-162

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हदीस कुदसी में फरमाया कि अल्लाह ने फरमाया है :

[وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِيْ بِشَيْءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِمَّا افْتَرَضْتُهُ عَلَيْهِ]

(मेरी नज़दीकी के वास्ते मेरा बन्दा जो भी अमल करता है उन में से अनिवार्य तथा फर्ज़ काम सब से अधिक पसन्द है)बुखारी

प्रश्न 3: इबादत की किस्में कौन कौन हैं?

उत्तर 3: इबादत की बहुत सारी क़िस्में हैं जैसे दुआ़ अल्लाह का ख़ौफ़ और डर अल्लाह से उम्मीद एवं आशा उसी पर भरोसा, कुर्बानी,नज़र व नियाज़ रूकूअ़ सजदे तवाफ और क़सम,फर्मा रवाई इनके अलावह और बहुत सारी इबादतैं हैं ।

प्रश्न 4: अल्लाह तआ़ला ने रसूलों को किस मक़सद के लिऐ भेजा?

उत्तर 4: अल्लाह तआ़ला ने सारे रसूलों को केवल अपनी इबादत की दावत देने और अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने से रोकने के लिऐ भेजा अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ
وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ

[नहल-36]

(और हमने हर उम्मत में रसूल)भेजे कि (लोगो)!केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) करो और तागूत से बचो)

तागूत हर उस चीज़ को कहते हैं जिसकी लोग इबादत करें और अल्लाह के अलावह उस से

फरयाद रसी करें और वह उस से राज़ी हो रसूल ﷺ का फरमान है किः

وَدِينُهُمْ وَاحِدٌ الأَنْبِيَاءُ إِخْوَةٌ

[मुत्तफ़क अलैह]

(सारे नबी आपस में भाई हैं और सब का दीन एक है) यानी सारे रसूलों ने अल्लाह की तौहीद की दावत दी

तौहीद की क़िस्में

(तौहीद की तीन किस्में हैं)

1- तौहीद रुबूबिय्यत
2- तौहीद उलूहिय्यत
3- तौहीद अस्मा व सिफ़ात

प्रश्न 5: तौहीद रुबूबिय्यत किसे कहते है?

उत्तर 5: अल्लाह तआ़ला को उसके सारे कामों में एक जानना और यह पक्का अ़क़ीदा रखना कि वही अकेला ख़ालिक रोज़ी देने वाला ज़िन्दगी और मौत और लाभ तथा हानि वग़ैरह का मालिक है .अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

(सब तारीफ अल्लाह सारे जहान के रब के लिये है) सूरह फातिहा-2

और रसूल ﷺ ने फरमाया हैः

أَنْتَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

(तु ही आसमानों और ज़मीन का पालान हार और रब है) (मुत्तफक़ अलैह)

प्रश्न 6: तौहीद उलूहिय्यत किसे कहते है?

उत्तर 6: सारी इबादात एवं उपासनाएं केवल अल्लाह के लिए करना,जैसे दुआ, कुर्बानी, नज़र, व नयिाज़,फरमा रवाई, नमाज़, उम्मीद,खौफ,डर,फरयादरसी,और तवक्कुल तथा भरोसा वगैरह अल्लाह तआ़ला फरमाता है

وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ

(और तुम सब का माबूद एक अल्लाह है उस के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं,वह बहुत कृपाल और बड़ा दयालू है) सूरह बक़रः-163

और रसूल ﷺ ने फरमाया है :

فَلْيَكُنْ أَوَّلَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ أن لا إله إلا الله.....

(सब से पहले इस बात की दावत दो कि अल्लाह तअ़ला के सिवाय कोइ हक़ीक़ी माबूद तथा सत्य उपास्य नहीं) (मुत्तफक़ अलैह)

और सही बुखारी की एक हदीस में है

[إلى أن يُوَحِّدُوا الله....]

(यहाँ तक कि लोग अल्लाह की वहदानियात (एक होने के) मानने वाले हो जाऐं।

प्रश्न 7: तौहीद उलूहिय्यत और तौहीद रुबूबिय्यत का मक़सद क्या है?

उत्तर 7: तौहीद उलूहिय्यत और तौहीद रुबूबिय्यत का मक़सद मात्र यह है कि लोग अपने रब और हक़ीक़ी माबूद की अज़मत तथा महिमा जानते हुए केवल उसी की इबादत करें और अपने मुआमलात एवं सुलूक में उसी की इताअत तथा आज्ञा पालन और ताबेदारी करें अतः उन के दिल में ईमान बैठ जाऐं और अल्लाह की धरती पर अल्लाह का धर्म लागू हो।

प्रश्न 8: तौहीद अस्मा व सिफ़ात किसे कहते है?

उत्तर 8: अल्लाह तआ़ला के लिऐ जितने भी नाम और सिफतें (विशोषताऐं,गुण) (असमा व सिफात) हैं इन को बिना किसी प्रकार की तावील (अर्थपन) (गलत व्याख्या करना)और इन्कार,तमसील(उपमा समकक्ष) और तशबीह, विना कैफियत (अवस्था)बयान किये हुए हक़ीक़ी पर महमूल करके मानना जिसे अल्लाह ताला ने अपने लिऐ अपनी किताब कुरआन में और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सही हदीस में अल्लाह पाक के लिऐ बयान किया है जैसे इसतिवा (अर्श पर मुस्तवी होना)नुज़ूल (अर्श से उतरना) यद (हाथ)जैसा कि अल्लाह तआ़ला के लायक़ तथा उचित है,अल्लाह का फरमान है :

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

(उस जैसी कोई चीज़ नही, वह सुनने वाला देखने वाला है) (सूरह शूरा11)

यानी ना ही ज़ात में और ना ही सिफात में वह अपनी मिसाल आप है अकेला तथा बेनियाज़ है,और रसूल ﷺ ने फरमाया है :

يَنْزِلُ رَبُّنَا فِي كُلِّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا....

(हमारा रब हर रात निचले असमान पर उतरता है) (मुत्तफक अलऐह)

यानी उस तरह उतरता है जैसा उसके लायक़ है उसकी मखलूक़ात तथा रचनाओं में कोई उसके प्रकार नहीं।

गुनाहों मे सबसे बड़ा गुनाह

प्रश्न 9: अल्लाह ताआ़ला के यहाँ गुनाहों में साब से बड़ा गुनाह क्या है?

उत्तर 9: अल्लाह ताआ़ला के यहाँ गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह शिर्क है ।

अल्लाह ताआला फरमाता है

يَابُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ

(और जब लुक़मान ने नसीहत करते हुए अपने पुत्र से कहा कि हे मेरे प्रिय पुत्र!अल्लाह तआला के साथ साझीदार न बनाना,बेशक अल्लाह का साझीदार बनाना बहुत बड़ा ज़ुल्म है) (सूरह लुक़मान13)

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सब से बड़े गुनाह के बारे मे पूछ ताछ करने के अवसर पर आपने फरमाया :

أن تجعل لله نداً وهوَ خلقك.....

(कि तुम अल्लाह के लिऐ हम मिसल,साझी दार और शरीक ठेहराओ जबकि उसी ने तुम को पैदा फरमाया) मुत्तफक़ अलैह

प्रश्न 10: बड़ा शिर्क किसे कहते हैं?

उत्तर 10: उपासनाओं तथा इबादतों मे से किसी प्रकार की इबादत एवं उपासना अल्लाह के अलावह के लिऐ करने को बड़ा शिर्क (शिर्क अकबर) कहते हैं ,जैसे दुआ, कुरबानी आदि अललाह का फरमान है :

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ الظَّالِمِينَ

[यूनुस-106]

(और अल्लाह को छोड़कर कभी ऐसी चीज़ को न पुकारना जो तुझ को न कोई लाभ पहुँचा सके और न कोई नुकसान पहुँचा सके ,फिर अगर ऐसा किया तो तुम इस हालत में ज़ालिमों में से हो जाओगे)

और अल्लाह के रसूल ﷺ का फरमान है :

أَكْبَرُ الْكَبَائِرِ الإِشْرَاكُ بِاللَّهِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ، وَشَهَادَةُ الزُّورِ

(बड़े गुनाह में सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शिर्क करना,माता पिता की नाफर्मानी और झूठी गवाही देना है) (सहीह बुखारी)

प्रश्न 11: बड़े शिर्क (शिर्क अक्बर) का नुकसान क्या है?

उत्तर 11: बड़ा शिर्क (शिर्क अक्बर) करने वाला सदैव नर्क मे रहेगा। अल्लाह तआला का फरमान है :

إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ

[मायेदा-72]

(जो अल्लाह के साथ शिर्क करे गा अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा)

और रसूल ﷺ ने फरमाया:

من لقيه يُشرك به شيئاً دخل النار

(जिस ने अल्लाह से मुलाक़ात कुछ भी शिर्क के साथ किया वह नर्क में दाखिल होगा) (सहीह मुस्लिम)

प्रश्न 12: क्या शिर्क के साथ नेक अमल लाभ दायक होगा?

उत्तर 12: शिर्क होते हुऐ कोई अमल लाभ दायक नही होगा अल्लाह का फरमान है :

وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

(और अगर वे लोग भी शिर्क(मिश्रण) करते तो उन के अमल बेकार हो जाता l) (सूरह अन्आम-88)

और हदीस कुदसी है अल्लाह तआला ने फरमाया :

أَنَا أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ مَنْ عَمِلَ عَمَلاً أَشْرَكَ فِيهِ غَيْرِي تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ

(मैं शिर्क से मुकम्मल तौर पर बेनियाज़ हूँ जिस किसी ने भी किसी भी अमल में मेरे साथ किसी गैर को शरीक किया तो वह जाने और उसका शिर्क) (सहीह मुस्लिम)

शिर्क अकबर की कुछ क़िस्में

प्रश्नः13- क्या हम मुरदों और ग़ैर मौजूद को इस्तिग़ासा तथा मदद एवं सहायता माँगने के लिए पुकार सकते हैं ?

उत्तर : 13 - हम ऐसे लोगों से मदद न माँगें बल्कि अल्लाह तआला से मदद माँगा करें अललाह तआ़ला ने फरमाया :

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ

(और जिन जिन को यह लोग अल्लाह तआला के सिवा पुकारते हैं,वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते,बल्कि वे खुद पैदा किये हुए हैं । मुरदे हैं ज़िन्दा नहीं,उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि कब उठाये जायेंगे।) सूरह नहल--20-21

और रसूल ﷺ का फरमान है

يا حيُّ يا قَيوم بِرَحمَتِك أستَغِيثُ

(ऐ ज़िन्दह और सब का थामने वाला तेरी रहमत के ज़रये हम मदद माँगते हैं) (सुनने तिरमिज़ी)

प्रश्न 14: क्या हम ज़िन्दा को उन से मदद माँगने के लिए पुकार सकते हैं?

उत्तर 14: हाँ! **जिन चीज़ों मे वह मदद कर सकते हैं** । अल्लाह तआला ने मुसा अलैहिस्सलाम के बारे में फरमाया :

فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ
فَوَكَزَهُ مُوسَى فَقَضَى عَلَيْهِ

(उस के गिरोह वाले ने उस के ख़िलाफ जो उस के दुश्मनों में से था उस से मदद माँगी जिस पर मुसा ने उसे घूँसा मारा जिस से वह मर गया) (सूरह क़िसस-15)

प्रश्न 15: क्या ग़ैरुल्लाह से इस्तिआ़नत तथा मदद मांगना जायज़ है?

उत्तर 15: उन कामों और मुआमलात में जिन पर मात्र अल्लाह तआ़ला क़ादिरे मुतलक़ (सर्वशक्तिमान्) है गैरुल्लाह से मदद माँगना जायज़ नहीं है, अल्लाह तआ़ला फरमाता है:

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِين

(हम तेरी ही इबादत(उपासना)करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं) सूरह फातिहा-5

और रसूल ﷺ ने फरमायाः

وَإِذَا سَأَلتَ فاسأَلِ الله وَإِذا استَعَنتَ فَاستَعِن بِالله

(जब माँगो तो अल्लाह ही से माँगो और जब मदद तलब करो तो अल्लाह ही से मदद तलब करो) (सुनन तिरमिज़ी)

प्रश्न 16ः क्या हम ज़िन्दा लोगों से मदद हासिल कर सकते हैं ?

उत्तर 16ः हाँ! जिन चीज़ पर वह मदद कर सकते हैं उनमें मदद हासिल कर सकते हैं जैसे कर्ज़ (ऋणि)लेना कोई ऐसी चीज़ माँगना जो वह दे सकें अल्लाह तआला फरमाता हैः

وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَى

(और नेकी तथा परहेज़गारी एवं तक़वा पर आपस में मदद करो) सूरह मायेदः 2

और आप ﷺ ने फरमायाः

وَاللهُ فِي عَونِ العَبدِ مَا كَانَ العَبدُ فِي عَونِ أَخِيه

(अल्लाह तआ़ला बन्दे की मदद उस समय तक करता है जब तक बन्दह अपने भाई की मदद करता है) (सहीह मुस्लिम)

हाँ शिफा,तन्दुरुस्ती,रोज़ी रोटी तथा हिदायत या उसके प्रकार दूसरी चीज़ें केवल अल्लाह ही से माँगी जाऐं गी क्यों कि यह ज़िन्दह लोग भी नहीं करसकते मुरदों को कौन कहे। अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

وَالَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ -وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي
وَيَسْقِينِ-وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ

(जिस ने मुझे पैदा किया है वही मेरी हिदायत करता है । वही है जो मुझे खिलाता-पिलाता है। और जब बीमार पड़ जाऊँ तो शिफा देता है) सूरह शूअरा-78-80

प्रश्न 17: क्या ग़ैरुल्लाह के लिऐ नज़र मानना जायज़ है?

उत्तर 17: केवल अल्लाह ही के लिऐ नज़र मानना जायज़ है गैरुल्लाह के लिऐ नहीं क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इमरान अलैहिस्सलाम की पत्नि के बारे मे बयान करते हुऐ फरमाया

رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا

(हे मेरे पालनहार! मेरे गर्भ में जो कुछ भी है उसे तेरे नाम से आज़ाद करने की मन्नत मान ली तो तू इसे

कुबूल कर,बेशक (निःसन्देह)तू अच्छी तरह से सुनने वाला और जानने वाला है) सूरह आले इमरान -35

और रसूल ﷺ का फरमान है :

مَن نَذَر أن يُطِيعَ الله فليُطِعه وَمَن نَذَر أن يَعصِيه فَلا يَعصِه

(जो अल्लाह तआ़ला कि इताअत तथा आज्ञा पालन करने की नज़र माने तो उसे पूरी करे और जो अल्लाह की नाफरमानी करने की नज़र माने तो उसकी नाफरमानी न करे)

(सहीह बुखारी)

जादू का हुकुम

प्रश्न 18: जादू का क्या हुकुम है?

उत्तर : 18 - जादू बड़े गुनाहों मे से है और कभी उसे कुफ्र में से गिना जाता है ।

अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः

وَلَكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ

(बल्कि यह कुफ्र शैतानों का था,वे लोगों को जादू सिखाते थे) (सूरह बक़राः102)

और रसूल ﷺ का फरमान है :

اجتنبوا السبع الموبقات، قالوا: يارسول الله وما هن؟ قال: الشرك بالله، والسحر، وقتل النفس التي حرم الله إلا بالحق، وأكل الربا، وأكل مال اليتيم، والتولي يوم الزحف

(सात बरबाद करने वाली चीज़ों से बचो ! सहाबा ने पूछा हे अल्लाह के रसूल ! वह क्या हैं आप ने फरमाया : अल्लाह के साथ शिरक करना,जादू , बिना हक़ किसी की हत्या करना सूद खाना, यतीम एवं

अनाथ का धन खाना, जिहाद के मैदान से पीठ फेर कर भागना)

(सहीह बुखारी)

कभी कभार जादूगर मुश्रिक, काफिर या फसादी होता है जिसका क़िसास के तौर पर हद जारी करते हुऐ या सज़ा के तौर पर क़त्ल करना वाजिब तथा अनिवार्य है और यह सब सज़ा उसके शोअबदह बाज़ी और फितना परवरी के हिसाब से लागू किया जाऐ गा।

प्रश्न 19: क्या ग़ैब तथा अदृश्य के इल्म के बारे में काहिन (नुजूमी) और ग़ैब की खबर देने वाले की तसदीक तथा पुष्टि करना हमारे लिऐ जायज़ है?

उत्तर 19: इन दोनों की तसदीक एवं पुष्टि करना हमारे लिऐ बिल्कुल जायज़ नहीं है। अल्लाह तआ़ला का फरमान है।

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ
وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ

(कह दीजिए कि आकाश वालों में से और धरती वालों में से अल्लाह के सिवाऐ कोई ग़ैब (अदृश्य)की बात नहीं जानता) सूरतुन नमल-65

और रसूल ﷺ का फरमान है :

مَن أَتَى كَاهِناً أَو عَرَافاً فَصَدقَهُ بِمَا يَقول فَقد كَفَر بِمَا
أَنزلَ عَلَى مُحَمدٍ

(जो आदमी किसी अर्राफ (गैब ताथ अदृश्य की बातें बताने वाला) या काहिन (जिनों से हालत मालूम करके लोगों को बताने वाला) के पास गया और उस की कही हुई बात की तसदीक एवं पुष्टि की तो उसने मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारी गई शरीअत को नकार दिया) **(मुसनद अहमद यह हदीस सहीह है)**

इस हदीस से यह बात मालूम होती है कि काहिनों,ग़ैब **यानी अदृश्य** की बातें बताने वालों, हथेलियाँ देख कर हालात बताने वालों, कपड़े वगैरह फेक कर लोगों के अन्दुरूनी बातों का खोज लगाने वालों,सीनों के भेदों,बीते हुये तथा भविष्य में होने वाली बातों का ज्ञान रखने के दावेदारों की तसदीक एवं पुष्टि करना या उन से ग़ैब कि बातें मालूम करना हराम और नाजायज़ है ।

छोटा शिर्क (शिर्क अस्गर)

प्रश्न 20: छोटा शिर्क (शिर्क अस्गर) किसे कहते हैं ?

उत्तर 20: छोटा शिर्क(शिर्क अस्गर) बड़े गुनाह में से है प्रन्तु छोटा शिर्क (शिर्क अस्गर) करने वाला हमेशा जहन्नम एवं नर्क में नहीं रहे गा,और इसकी कई किस्में हैं जिनमें से ऐक क़िस्म रिया तथा दिखावा है अल्लाह तआला का फरमान है:

فَمَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلاً صَالِحًا وَلا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا

(तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी भागीदार न करे) सूरह कहफ़-110

और रसुल ﷺ का फरमान है :

إن أخوَفَ مَا أخَافُ عَلَيكُم الشِرْكُ الأصغَرُ: الرِيَاءُ

(सब से ज़्यादह मुझे तुम लोगों पर शिरक अस्गर (छोटे शिरक) अर्थात रिया का खतरा है) (मुस्नद अहमद - यह हदीस सहीह है)

प्रश्न 21: क्या ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना जायज़ है?

उत्तर 21: गैरुल्लाह कि क़सम खाना जायज़ नहीं।

अल्लाह तआ़ला फरमाता है :

قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ

(आप कह दीजिए कि क्यों नही, अल्लाह की क़सम तुम ज़रूर फिर ज़िन्दा किये जाओगे) सूरह तग़ाबुन -7

और रसूल ﷺ का फरमान है :

من حلف بغير الله فقد أشرك

(जिसने ग़ैरुल्लाह की कसम खाई उसने शिरक किया) मुस्नद अहमदःयह हदीस सही है ।
तथा दूसरी हदीस में है कि

مَن كَانَ حَالِفاً فليَحلِفُ بِاللهِ أو لِيَصمُتْ

(जो आदमी क़सम खाना चाहे वह अल्लाह की क़सम खाऐ या खामोश रहे)

अगर कसम खाने वाले का अक़ीदह यह हो कि वली को लाभ या हानि पहुँचाने का हक़ हासिल है और वली की झूठी क़समें खाने से डरता हो तो ऐसी सूरत में नबियों और वलियों की कसमें खाना शिर्क अक्बर (बड़ा शिर्क होगा ।)

प्रश्न 22ः क्या हम शिफ़ा के लिऐ धागा या कड़ा या छल्ला आदि पहन सकते हैं?

उत्तर 22ः शिफ़ा तथा बीमारी से झुटकारा हासिल करने के लिऐ धागा या कड़ा तथा

छल्ला वगैरह पहनना बिल्कुल हराम और ना जायज़ है अल्लाह तआ़ला फरमाता है :

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ

(और अगर अल्लह तआ़ला तुझको कोई तकलीफ दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई दूसरा नहीं है) सूरह अंआम 17

(وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ)

(इन में से अधिक लोग बावजूद अल्लाह पर ईमान लाने के मुशरिक हैं) (सूरह यूसुफ-106)

प्रश्न 23ः बुरी नज़र से बचने के लिऐ क्या हम सीपी, कौड़ी वगैरह लटका सकते हैं?

उत्तर 23: बुरी नज़र से बचने के लिऐ सीपी या इस के प्रकार कोई भी चीज़ लटकाना या जिस्म (शरीर) के किसी अंग पर बाधँना उचित तथा जायज़ नहीं है अल्लाह ताआ़ला फरमाता है:

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ

(और अगर अल्लाह तआ़ला तुझको कोई तकलीफ दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई दूसरा नही है) सूरह अंआम -17

और रसूल ﷺ ने फरमाया है :

مَن تَعَلَّقَ تَمِيمَةً فَقَدْ أَشْرَكَ

(तमीमह लटकाने वाले ने अल्लाह के साथ शिर्क किया) (मुसनद अहमद)

तमीमह का अर्थः

सीपी या कौड़ी या इस की प्रकार हर वह तावीज़ और गन्डा है जो लोग गर्दन वगैरह मे बुरी नज़र या अन्य रोगों से बचने के लिऐ बाधँते हैं ।

तवस्सुल और उसकी किस्में

प्रश्न 24: अल्लाह तआ़ला के लिऐ हम किस चीज़ का वसीला तथा ज़रीया पकड़ सक्ते हैं?

उत्तर 24: तवस्सुल और वसीला की दो क़िस्मैं हैं ।

1- जायज़ वसीला

2- ना जायज़ वसीला

1- जायज वसीला: जिसे तलाश करने का आज्ञा दिया गया है : अल्लाह तआ़ला के अच्छे अच्छे नाम और उसकी सिफ़ात, अपने अपने अमल, जिन्दह मौजूद नेक अदमी से दुआ कि फरमाइश के ज़रया वसीला और तवसुल हासिल करना।

अल्लाह तआला का फरमान है :

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا

(और अच्छे नाम अल्लाह के लिऐ ही हैं,इसलिए इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो,) सूरह आराफ़ -180

और अल्लाह ने फरमाया :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ

(ऐ मुसलमानों ! अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और उसकी ओर नज़दीकी हासिल करने की कोशिश करो) सूरह मायेदः35

(यानी ऐसे आमाल ताथ कार्य करो जिससे अल्लाह की प्रसन्नता और उसका वसीला हासिल हो जाऐ) और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

أسأَلكَ بكُلِّ إسمٍ هُوَ لَكَ سَميتَ به نَفسَكَ

(ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरे हर उस नाम के वसीले से माँगता हूँ जो तूने अपना नाम रखा है) सहीह इबने हिब्बान

अल्लाह और रसूल तथा नेक लोगों से मुहब्बत को वसीला बना सकते हैं क्योंकि यह सारी मुहब्बतें नेक आमाल में से हैं | जैसे हम कहें

اللهُم بحُبكَ لِرَسُولِكَ وَأَوْلِيائكَ أنْصُرْنا وَبِحُبكَ لِرَسُولِكَ وَ أَولِيائَكَ إشفِنا

(ऐ अल्लाह अपने रसूल और महबूब बन्दों से अपनी मुहब्बत के वसीले से हमारी मदद फरमा ऐ अल्लाह अपने रसूल और महबूब बन्दों से अपनी मुहब्बत के वसीले से हमें शिफा दे)

2- हराम तवस्सुल और वसीला :

मुर्दों को पुकारना और उन से मदद माँगना जैसा कि आज बहुत सारे इस्लामी देशों में पाया जाता है यह बड़ा शिरक है क्योंकि अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

وَلا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لا يَنْفَعُكَ وَلا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ الظَّالِمِينَ

(और अल्लाह के सिवा उन माबूदों को न पुकारो जो आप को न लाभ पहुँचा सकते है और न हानि,और यदि

आपने ऐसा किया तो निश्चय ही उस समय आप ज़ालिमों मे से हो जायेंगे) सूरह यूनुस -106

3- अलबत्तह रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाह व हशमत का वसीला बनाना कि आप कहें !

یارب بجاہ محمد اشفنی

(या रब्बी बिजाहि मुहम्मद इशफिनी)

(ऐ मेरे रब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाह व हशमत के वसीले या सदके से मुझे बख्श दे) तो ऐसा कहना सही नहीं है क्योंकि सहाबा किराम ने ऐसा नहीं किया है ।

यह बात याद रहे कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ को

उस समय वसीला बनाया था जब वह ज़िन्दह (जीवित) थे।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद आप का वसीला नहीं लिया और न ही आप को वसीला बनाया अतः अगर कोई आदमी यह अक़ीदह रखे कि अल्लाह तआ़ला किसी मनुष्य के वासते का मुहताज है जैसे कि दुनियावी (संसारिक) हाकिम और बादशाह होते है तो यह वसीला शिर्क तक पहुँचा देगा क्योंकि उसने खालिक को मखलूक जैसा समझा।

इमाम अबु हनीफा ने फरमाया है !

أكره أن أسأل بغير الله

(मैं गैरुल्लाह के वसीले से माँगने को मकरूह समझता हूँ)

और सलफ के नज़दीक मकरूह शब्द का अर्थ हराम है जैसा कि अद्धर्रुल मुख्तार के लेखक ने बयान किया है।

दुआ़ और उसका हुकुम

प्रश्न 25ः क्या दुआ़ कुबूल होने के लिऐ किसी मखलूक के वासते की ज़रूरत है?

उत्तर 25ः दुआ़ कुबूल होने के लिऐ किसी भी मखलूक के वासते और वसीले की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है अल्ला तआला फरमाता हैः

وإذا سَأَلَكَ عِبادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ

(यदि आपसे मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें,तो आप कह दीजिये कि मैं करीब हूँ पुकारने वाले की पुकार का

उत्तर देता हूँ जब वह मझे पुकारता है) सूरह बक़रः186

और रसूल ﷺ का फरमान हैः

إِنكُم تَدعونَ سَمِيعاً قَرِيبًا وَهُوَ مَعَكُم

(यकीनन तुम लोग सुनने वाले क़रीब को पुकारते हो वह तुम लोगों के साथ है)सही मुस्लिम

यानी अपने ज्ञान और कुदरत द्वारा साथ है-वह तुम्हारी सुनतान और तुम्हें देखता है ।

प्रश्न : 26 - क्या ज़िन्दह लोगों से दुआ़ करने की फरमाईश करना जायज़ है ?

उत्तर : 26 - हाँ जिन्दह लोगों से दुआ करने कि फरमाईश करना जायज़ है । अल्बत्तह मुर्दह लोगों से नहीं,अल्लाह तआला अपने रसूल

को ज़िन्दगी की हालत मे मुखातब तथा आकर्षित करके फरमाता है :

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

(और आप अपने गुनाहों के लिए माफी की दुआ करते रहिए,और मोमिन मर्दों और औरतों के लिए भी) सूरह मुहम्मद-19

ऐक और सहीह हदीस में है :

أَنَّ رَجُلًا ضَرِيرَ الْبَصَرِ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ادْعُ اللَّهَ أَنْ يُعَافِيَنِي قَالَ إِنْ شِئْتَ دَعَوْتُ وَإِنْ شِئْتَ صَبَرْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ

(एक नाबीना (अन्धा) आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आऐ और कहा आप अल्लाह तआ़ला से दुआ फरमाऐं कि अल्लाह तआला मुझे आफियत दे ! आप ने फरमाया अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिये दुआ करूँ

और अगर सब्र करो तो तुम्हारे लिऐ बेहतर है००००) सुनने तिरमिज़ी

प्रश्न : 27 - रसूल की शिफ़ाअत हम किस से माँगें ?

उत्तर : 27 - रसूल की शिफ़ाअत हम अल्लाह से माँगा करें,अल्लाह तआला का फरमान है : {قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا}

(**ऐ मेरे नबी !** आप कह दीजिए कि हर शिफारिश (विनती) केवल अल्लाह के लिए है) (सूरह ज़ुमर : 44)

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी को सिखाया कि वह कहें : اللهُمَّ شَفِّعْهُ فِيَّ।

(ऐ अल्लाह तु उन की शिफाअत मेरे बारे मे कुबूल फरमा) इसको इमाम तिरमज़ी ने रिवायत किया और हसन और सहीह कहा है।

इसी प्रकार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है।

[إنني خبأتُ دَعوَتِي شِفَاعة لأمَّتِي يَومَ القِيامَة فَهِيَ نائِلة إن شَاء الله مَن مَاتَ مِن أمَّتِي لا يُشرك بالله شيأً]

(मैं ने अपनी दुआ क़ियामत के रोज अपनी उम्मत की शिफाअत के लिऐ खास रखा है और अगर अल्लाह ने चाहा तो यह यक़ीनन उन सारे लोगों को मिले गी जो मेरी उम्मत में से इस हाल में देहाँत पाये गा कि उसने अल्लाह के साथ कुछ भी शिर्क नहीं किया हो)सही मुस्लिम

प्रश्न : 28 - क्या जिन्दह लोगों से शिफाअत तलब की जासकती है ?

उत्तर : 28 - दुनियावी कारोबार (मामलात) में ज़िन्दह लोगों से शिफ़ाअत तलब की जा सकती है। अल्लाह तआ़ला फरमाता है :

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا

(जो व्यक्ति कोइ अच्छी शिफारिश करता है,तो उसकी नेकी का एक भाग उसे भी मिलता है,और जो बुरी शिफारिश करता है,तो गुनाह का कुछ भाग उसके नाम-ए-आमाल (कर्म-पंजी) मे भी जाता है,) (अर्थात उस बुराई का हिस्सा) सूरह निसा -85

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : **[إشفعوا تؤجروا]** (शिफाअत करो अज्र व सवाब पाओगे) सुनने अबुदाऊद

सूफियत तथा उसके खतरे और अशंकाये

प्रश्न : 29 - सूफियत के बारे में इस्लाम का क्या हुकुम तथा निर्देश है ?

उत्तर : 29 - रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने या सहाबा और ताबईन के ज़माने में सूफियत का बिल्कुल नाम निशान नहीं था बल्कि इसके परपुर्ज़े उस ज़माने में निकलना शुरू हुए जब यूनानी किताबें अरबी भाषा में अनुवाद हो कर फैलने लगीं।

यह बात याद रहे कि सूफियत या तसव्वुफ बहुत सारी चीज़ों में इस्लाम के मुखालिफ है उन में से कुछ निम्न लिखित हैं !

1 - गैरुल्लाह को पुकारना

ब्हुत से तसव्वुफ वाले मुर्दों तथा गैरुल्लाह को पुकारते और उन से दुआऐं करते हैं जब कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है :

الدُّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ

(दुआ़ ही इबादत है) सुनुन तिरमिज़ी

और गैरुल्लाह से दुआ़ करना या मदद वगैरह के लिऐ उन्हें पुकारना उन बड़े शिर्क में से है जो अमल को बरबाद करदेता है ।

2 - बहुत से सूफ़ियों का अक़ीदह तथा आस्था है कि अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ात के

साथ हर जगह मौजूद है जब कि यह अकीदह कुरआन के बिल्कुल खेलाफ हैं कुरआन में है

الرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى

(रहमान अ़र्श पर विराजमान है)(सूरह ताहा:5

3 - कुछ सूफियों का अक़ीदह है कि अल्लाह तआ़ला अपने मख़लूक़ एंव रचना मे हुलूल किऐ हुऐ यानि अल्लाह अपनी रचना में अवतार लिए हुऐ है यहाँ तक कि इब्ने अरबी ने कहा है जो दिमश्क़ में दफ़न किया गया है और बड़े गुमराह सुफियों में से था |

العَبدربٌ والرَّبُّ عَبدُ يَاليتَ شِعرِى مَن المُكلفُ

बन्दह रब है और रब बन्दह है मुझे क्या मालूम मुकल्लफ (दायी)कौन है ?

وَمَا الكَلبُ والخِنزِيرُ إلاَّ إلهُنا وَمَا اللهُ إلاَّ راهِبٌ فِي كَنِيسة

कुत्ते और सुवर हमारे माबूद हैं गिरजे में बैठा पादरी अल्लाह है ।

4- अधिक्तर सूफियों का अकीदा है कि अल्लाह तआ़ला ने संसार को केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कारण पैदा फरमाया है जब कि खुल्लम खुल्ला यह कुरआन के खेलाफ है,अल्लाह का फरमान हैः

وَما خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلاَّ لِيَعْبُدُونِ

(और मैं ने जिन्नों और इन्सान को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें) सूरह ज़ारियातः56

और फरमाया : {وَإِنَّ لَنا لَلْآخِرَةَ والأولى}

(और बेशक आखिरत और संसार के मालिक हम हैं) सूरःअल-लैल :13

5- बहुत से सूफियों का अकीदह है कि अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने नूर (प्रकाश)से पैदा किया है और उनके नूर से संसार की तमाम चीज़ें पैदा किया और सब से पहले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैदा किया जबकि यह सब अकीदह कुरआन के बिल्कुल खेलाफ है।

4- सूफियों के यहाँ इस्लामी शरीअत के खिलाफ कामों में से यह काम भी है। अवलिया के लिऐ नज़र व नियाज़ करना,उनकी कब्रों का तवाफ करना,क़ब्रों पर मज़ार बनाना,और ऐसे ऐसे ज़िक्र व अज़कार करना जिसे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

जायज़ नही किया और इन मनमानी ज़िक्र व अज़्कार से वजद मे आकर नाचना ढ़ोल और लोहे वगैरह बजाना आग खाना , तावीज़ गन्डा जादू द्वारा लोगों का ना जायज़ तौर से माल खाना और उन से मक्कारीयाँ तथा ठगी करना आदि ।

अल्लाह और उसके रसूल के फरमान के बारे मे हमारा विचार

प्रश्न : 30 - क्या हम अल्लाह और रसूल के फरमान और बात पर कोई भी बात मुकद्दम तथा आगे कर सकते है ?

उत्तर : 30 - अल्लाह और उसके रसूल की बात और फरमान पर हम कोई भी क़ौल या बात बिल्कुल मुक़द्दम नहीं कर सकते क्योंकी अल्लाह तआ़ला फरमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ

(ऐ ईमानवालो ! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो) सूरह हुजरात -1

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :[لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوقٍ فِي مَعْصِيَةِ الْخَالِقِ]

(ख़ालिक़ कि नाफरमानी में किसी मखलूक़ की इताअत जायज़ नही है) मुस्नद अहमद

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का फरमान है :

(कि मेरा खयाल है कि वह लोग नष्ट व बरबाद हो जाऐं गें मैं कहता हूँ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया और वे लोग कहते हैं कि अबु बक्र और उमर ने कहा) मुसनद अहमद

प्रश्न : 31 - दीनी मसायल मे हमारे दरमियान इखतेलाफ होने की सूरत में क्या करना चाहिए ?

उत्तर : 31 - हमें कुरआन मजीद और सही हदीस के ओर लौटना चाहिए अल्लाह पाक का फरमान है :

فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا

(अगर किसी बात में इखतेलाफं एवं मतभेद करो तो उसे लोटाओ अल्लाह तआ़ला और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर अगर तुम्हें अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान है यह सब से अच्छा है और नतीज़ा के ऐतबार से बहुत अच्छा है) सूरः निसाः 59

अल्लाह तआ़ला और रसूल की ओर लौटाने का अर्थ कुरआन और हदीस की तरफ लौटाना, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

تَرَكْتُ فِيكُمْ أَمْرَيْنِ لَنْ تَضِلُّوا مَا تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا
كِتَابَ اللهِ وَسُنَّةَ رَسُولِهِ

(मैं ने तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़ दी हैं जब तक उन दोनों को तुम मज़बूती से पकड़े रहोगे गुमराह नहीं होगे अल्लाह की किताब और उसके रसूल कि सुन्नत व हदीस) सहीहुलजामेअ़ और मुवत्त ।

प्रश्न :32 - जिस अदमी की यह सोच हो कि वह इस्लामी शरीअ़त के हुक्मों का पाबंद नहीं है उसके बारे मे क्या हुकम है ?

उत्तर : 32 - उस अदमी का हुकम यह है कि वह काफ़िर तथा मुरतद है और इस्लाम धर्म से बाहर है क्योंकि उबूदियत(दासत्व)केवल अल्लाह तआ़ला के लिऐ है जिसका अर्थ दोनों शहादत का इक़रार करना जो हकीकत में उस समय तक साबित नहीं हो सकता यहाँ तक कि अल्लाह तआला की वह सारी इबादत की जाऐं जो अक़ीदे,इबादतों के निशानियाँ,अल्लाह के धर्म के अनुसार मुआमलात मे फैसला,ज़िन्दगी के सारे कामों में अल्लाह के धर्म के लागू करने के असल को शामिल हैं और अल्लाह के उतारे हुए धर्म के सिवा किसी अन्य धर्म के अनुसार किसी चीज़ को हलाल याह हराम क़रना शिर्क में से है और ऐसा करना बिल्कुल इबादत में शिर्क करने जैसा है ।

क़ब्रों की ज़ियारत और उसके आदाब

प्रश्न : 33 - कब्रों कि ज़ियारत का क्या हुकुम है ? और हमैं कब्रों की जियारत किस मक़सद से करना चाहिए ?

उत्तर : 33 - औरतों के अलावह मरदों को कब्रों की जियारत हर समय मुसतहब और बेहतर है और इसमें बहुत से लाभ हैं।

1- इस काम में इबरत तथा नसीहत है ताकि जिन्दह लोगों को यह याद रहे कि वे भी जल्द वफात पाऐंगे इसलिए अमल के लिऐ हर समय तैयार रहें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है :

كُنتُ نَهَيتكُم عَن زِيَارَةِ القُبُور فزُورُهَا

(मैं ने तुम लोगों को क़ब्रों की ज़ियारत से रोक दिया था प्रन्तु अब ज़ियारत करो)सहीह मुस्लिम [فَإِنها تُذكركُم بالآخِرة] (क्योंकि यह तुम लोगों को आख़िरत याद दिलाएगी)

2- मुर्दों एवं मृतक लोगों के लिऐ हम मग़फिरत तथा बखशिश की दुआ करें,हम इन्हें अल्लाह के अलावह न पुकारें और न ही उन से दुआ़ और वसीलह माँगें ।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों को क़ब्रसतान में जाते समय पढ़ने के लिये यह दुआ़ सिखाया :

اَلسَّلامُ عَليكُم أهَل الديار مِن ألمُؤمِنِينَ والمُسلِمِينَ
وإنا إن شَاء الله بكُم لا حِقُون أسألُ الله لَنا وَلَكُم العَافِية

[अस्सलमु अ़लैकुम अहलद्दियारि मिनल मूमिनीन वल्मुस्लिमी व इन्ना इन्शा अल्लाहु बिकुम लाहिकून अस्अलुल्लाहा लना व लकुम अल्आफियह]

(तुम पर सलामती हो इस बस्ती के मोमिनों तथा मुसलमानों और हम अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम से मिलने वाले हैं हम अपने लिए तथा तुम्हारे लिए अल्लाह से आफियत तथा सलामती चाहते हैं)

3 - कब्रों पर न बैठना और न ही उसकी ओर मुँह करके नमाज पढ़ना । रसूल का फरमान है : [لاَتَجعَلوابُيوتَكُم المَقابروَلاَتُصلوإليها] (न ही अपने घरों को कब्रस्तान बनाओ और न ही उसकी ओर मुँह करके नमाज़ अदा करो)सहीह मुस्लिम

(यानी जिस प्रकार कब्रस्तान में नमाज़ अदा करना हराम है उसी प्रकार अपने घरों को न समझ बैठो)

4 - कुरआन करीम में से कुछ भी न पढ़ना चाहे सूरह फातिहा ही क्यों न हो आप ﷺ ने फरमाया :

لا تَجعَلُوا بُيُوتَكُم مَقَابِرة فَإِن الشيطَانَ يَنفُرُ مِن
البَيتِ الذِى تَقرَأ فِيهَا سُورَة البَقَرَة

(अपने घरों को कब्रस्तान ना बनाओ क्योंकि जिस घर में सूरह बक़रह की तिलावत की जाऐ उस घर से शैतान भाग जाता) **सहीह मुसलिम**

ऊपर लिखी गई हदीस इस बात की ओर खुल्ला संकेत दे रही है घरों की अपेक्षा तथा बनिस्बत कब्रस्तान कुर्आन पढ़ने का स्थान नहीं है ।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमतथा आप के सहाबा से इस बात का बिल्कुल सुबूत नहीं मिलता कि मरे हुए लोगों के लिऐ कुर्आन पढ़ा हो हाँ मरे हुए के लिऐ दुआ़ किया है,आप मुरदों को दफन करने के बाद फरमाते :

إستغفروا لأخيكم وسلوا له التثبيت فإنه الآن يسأل

(अपने भाई के लिऐ बख्शिश और उसके लिऐ साबित क़दमी माँगों क्योंकि अभी अभी उस से पूछ ताछ किया जाऐ गा) हाकिम

5 - क़ब्रों पर फूल वगैरह न चढ़ाना,क्योंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के नेक सहाबा ने ऐसा नहीं किया है । यह नसरानी लोग करते हैं अगर हम उन फूलों का

मुल्य निर्धन एवं मिस्कीन और फकीरों को दे दें तो फकीर और मुर्दह दोनों को लाभ पहुँचे ।

6 - क़ब्रों को पक्की न बनाया जाऐ,और ना चूना गच किया जाऐ हदीस में है :

نَهَى رَسُول الله صلى الله عليه وسلم أن يُجَصَّ
القَبرُ وَأن يُبنَى عَليه

(नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कब्रों पर इमारत बनाने और उन्हें चूना गच करने से रोका है) सहीह मुस्लिम

7 - ऐ मेरे मुसलमान भाईयों ! मुरदों को पुकारने और उन से मदद माँगने से बचो क्योंकि यह बड़ा शिर्क है और मुरदे किसी चीज़ के मालिक नहीं । केवल अल्लाह तआ़ला को पुकारो ! वही हर चीज़ पर क़ादिर तथा

शक्तिमान और दुआ़ओं को कुबूल करने वाला है।

क़ब्रों पर सजदे करना और उसका तवाफ करना

प्रश्न : 34 - क़ब्रों पर सजदे और कुर्बानी करने का क्या हुकुम है ?

उत्तर : 34 - क़ब्रों पर सजदे करना तथा उन पर कुर्बानी करना जाहिलिय्यत के ज़माने की मूर्ती पूजा और बड़ा शिर्क है,क्योंकि यह दोनो कार्य इबादत हैं और इबादत केवल अल्लाह की होनी चाहिऐ। जिस ने भी इस इबादत को गैरुल्लाह के लिऐ किया तो वह मुश्रिक है।

अल्लाह का फरमान है :

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ
لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ

(आप कह दीजिए कि बेशक मेरी नमाज़,और मेरी सभी इबादतें और मेरी ज़िन्दगी और मौत सारे संसार के रब तथा पालनहार अल्लाह के लिए हैं । उसका कोई शरीक और भागीदार नहीं , मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं पहला हूँ जिन्होंने सब से पहले उसे माना)सूरह अंआमः162-163

और अल्लाह ने फरमायाः

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ

(बेशक हम ने तुझे कौसर (और बहुत कुछ) दिया है । तो तू रब ही के लिए नमाज़ पढ़ और कुर्बानी कर ।) सूरः कौषर-1-2

प्रश्न : 35-अवलियों की क़ब्रों का तवाफ करना और उन के लिए कुर्बानी और नज़र नियाज़ करने का क्या हुकुम है ? इस्लाम की नज़र में वली कौन है ? और क्या अवलिया से चाहे ज़िन्दह हों या मुर्दह दुआ़ करने कि फरमाईश जायज़ है ?

उत्तर : 35 - मुर्दोंके लिए कुर्बानी और नज़र व नियाज़ करना बड़ा शिर्क है ।

वली वह है जो इताअत एवं बन्दगी के द्वारा अल्लाह की विलायत तथा घनिष्ट संबन्ध और मित्रता प्राप्त करे चुनाँचे सारे अदेशों का आज्ञापालन करते हुए सारी रोकी हुई चीजों से रुका रहे अगरचे उसके हाथ पर करामत ज़ाहिर न हो ।

अवलिया या उनके अलावह किसी से भी मरने के बाद दुआ करने कि फरमाईश करना जायज़ नहीं है हाँ ज़िन्दह लोगों से जायज़ है ।और क़ब्रों का तवाफ करना जायज़ नहीं बल्कि यह महबूब अमल केवल खाने काबा के साथ खास है । जिसने क़ब्रों का तवाफ करके कब्र वालों का क़रीबी बनना चाहा तो उसने बड़ा शिर्क किया,और अगर ऐसा करके अल्लाह की नजदीकी चाही तो बिदअत किया क्यों कि क़ब्रों का तवाफ नहीं किया जाए गा और न ही उसके क़रीब नमाज़ अदा की जाए गी चाहे अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही क्यों न हो ।

अगरचे बुत हैं जमाअत की आसतीनों में
हमें है हुकमे अज़ाँ लाइलाहा इल्लल्लाह

प्रश्न : 35 अल्लाह की ओर बुलाने तथा और इसलाम पर अमल करने का क्या हुकुम है?

उत्तर : 35 - अल्लाह की ओर दावत देना और बुलाना हर उस मुसलमान कि ज़िम्मेदारी है जिसको अल्लाह ने कुरआन और अपने नबी का वारिस बनाया है वैसे तो आम तौर पर हर मुसलमान को अल्लाह की ओर दावत देने का आदेश है।

अल्लल्लाह का फरमान है :

ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

(अपने रब कि तरफ लोगों को हिक्मत और अच्छी शिक्षा के साथ बुलायें)सूरह नहल-125

और फरमाया :

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ

(और अल्लाह की राह में वैसा ही जिहाद करो जैसा जिहाद (धर्मयूद्ध)का हक़ है)सूरह हज्ज-78

इस लिए तमाम मुसलमान पर वाजिब तथा अनिवार्य है कि जिहाद के सारे भाग में उस हैसियत से भाग लें कि कोई भी काम जिसका सम्बन् जिहाद से है और वह उसकी ताकत रखता है न छोड़े खास कर इस समय जबकि ज़रूरत है कि मुसलमान इस्लाम पर अमल करें और अल्लाह की ओर दावत दें अतः उसके मार्ग में जिहाद करें और वास्तविक रूप से यह ज़िम्मेदारी हर मुसलमान कि गर्दन पर है तथा इस में किसी भी प्रकार की लापरवाही से पाप मिले गा |

मेरे मुसलमान भाईयों !

किताब और सुन्नत(कुरआन तथा हदीस) की सच्ची शिक्षा हासिल करके लोगों को हिकमत तथा नसीहत एवं उपदेश के साथ अल्लाह के मार्ग के ओर बुलाओ , इसी से उम्मत की सूधार होगी जिस से संसार में शान्ति,अमन क़ाएम होगा,अत्याचार,जुर्म और ज़्यादतीयाँ एवं पक्षपात् समाप्त होंगी।

दे हुकुम भली बात का मत हो जाहिल
लोगों को बुरे कामों से रोक ऐं गाफिल
وامُربالعُرفِ अल्लाह का हुकुम देख
وانَّهعَنِ المُنكَر पढ़ अगर है आकिल

इस्लाम से बाहर करदेने वाली चीज़ें।

हर मुसलमान को यह बात मालूम होनी चाहिए कि अल्लाह तआ़ला ने बन्दों पर यह वाजिब किया है कि वह मुकम्ल तरीक़े से इस्लाम में दाखिल होकर अपने अकीदे और अमल अतः अखलाक़,मुआमलात कुर्आन तथा हदीस के अनुसार ढ़ालें। कुर्आन तथा हदीस की हर छोटी बड़ी मुखालफत तथा विरोध से बचें।

इसी की दावत देने के लिए अल्लाह ने आखिरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा , और क़ियामत तक की सारी इन्सानियत तथा मानवता को बता दिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी तथा इत्तिबा अनुकरण और अनुसरण यानि आज्ञापालन करने वाला ही हिदायत पर है और आप की मुखालफत तथा विरोध करने वाला गुमराह तथा पथभ्रष्ट है,साथ ही साथ अल्लाह ने विभिन्न आयतों मे धर्मपरिवर्तन (इरतिदाद) और शिर्क

की खतरनाकी से आगाह आर जागरुक किया है,-उलमा किराम ने इरतिदाद के मसाएल में कुरआनी आयातों और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों की रोशनी में बहुत सी ऐसी चीजें लिखा है जिसके कर लेने से एक मुसलमान इस्लाम धर्म से बाहर होजाता है और उसका खून तथा माल हलाल हो जाता है।

इस सच्चाई को खोल खोल कर बयान करना जरूरी है क्योंकि बड़ी ही मेहनत करके कुछ लोगों के बीच यह शंका डाल जाता है कि इस्लाम में दाखिल होने के बाद कोई इस्लाम से बाहर कैसे होगा ?

जब कि यह समझना बहुत आसान है,आप जानते हैं कि वुज़ू करने के बाद अगर कोई अदमी वुज़ू तोड़ने वाले कामों में से कोई काम कर ले तो उसका वुज़ू टूट जाता है। जैसे पाखान पेशाब के मार्ग से कोई चीज़ निकल

जाए या गहरी नींद आजाऐ या बिना पर्दा के अपना शरम गाह छूले या ऊटं का मास खाले या अक़्ल खो जाए । इसी प्रकार सौम यानि रोज़े की हालत मे अगर कोई जान बूझ कर खा पी ले तो उसका रोज़ा टूट जाता है,ठीक बिल्कुल इसी प्रकार अगर कोई इस्लाम से बाहर करदेने वाले कामों में से कोई काम कर ले तो बिना शंका वह इस्लाम से बाहर होजाए गा ।

इसी लिए जरूरी है कि हर मुसलमान इस्लाम से बाहर कर देने वाली चीजों को अच्छे प्रकार जाने ताकि हर ऐसे काम से दूर रहे जो इस्लाम से बाहर कर देने वाले हैं ।

उलमा किराम ने नवाकिज़े इस्लाम (**इस्लाम से बाहर कर देने वाले काम**) की बहुत सारी चीज़ें लिखा है परन्तु हम निम्न में केवल उन्ही दस

नवाकिजे इस्लाम (**इस्लाम से बाहर कर देने वाले काम**) लिख रहे है जो बहुत फैली तथा राइज और प्रचलित हैं।

1- अल्लाह की इबादत मे शिर्क करना

अल्लाह तआला फरमाता हैः

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ

(बेशक अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किये जाने को माफ़ नहीं करता और इस के सिवाय जिसे चाहे माफ़ कर दे)सूरःनिसा 48

इसलिए उन नबियों तथा वलियों से जो देहाँत कर गये या उनके सिवाय दूसरे मुर्दों से दुआ़ करना और उन से फरयाद करना,उनसे ऐसे कामों में मदद माँगना जिसमे मदद करने की

ताक़त केवल अल्ला रखता है , मुरदों या किसी वली के लिए नज़र या नियाज़ करना और उनका नज़दीकी हासिल करने के लिए जानवर जबह करना बड़ा शिर्क है जिसका करने वाला इस्लाम से बाहर हो जाए गा ।

2 - अपने और अल्लाह के बीच किसी को वासता बनाना और उन से शिफाअत माँगना उन्ही पर भरोसा करना। अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ لا يَمْلِكُونَ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّماواتِ وَلا فِي الْأَرْضِ وَما لَهُمْ
فِيهِما مِنْ شِرْكٍ وَما لَهُ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ

(कह दीजिए कि अल्लाह के सिवाय जिन-जिन का तुम्हें भ्रम है (सब को)पुकार लो,न उन में से किसी को आकाशों और धरती में से एक

तिनका का हक़ है न उन का उन मे कोई हिस्सा है और न उन में से कोई अल्लाह का शरीक है |)सूरह सबा -22

3 - जो मुश्रिकों को काफिर न समझे या उनके कुफ्र मे शक (संदेह) करे उनके मज़हब को सही समझे तो वह काफिर हो जाए गा |

अल्लाह तआ़ला फरमाता है:

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ
قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ
وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ

(**मुसलमानो !** तुम्हारे लिए हज़रत इब्राहीम में और उन के साथियों में बहुत अच्छा नमूना है,जबकि उन

सब ने अपनी कौम (जनसमूह)से साफ शब्दों में कह दिया कि हम तुम से और जिन-जिन की तुम अल्लाह के सिवाय पूजा करते हो,उन सब से पूरी तरह से विमुख (बरी)हैं । हम तुम्हारे अक़ीदे का इन्कार करते हैं और जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ गे हम में और तुम में हमेशा के लिए कपट और बैर पैदा हो गई)सूरह मुम्तहिनः-4

4 - जो यह आस्थ एवं अक़ीदा रखे कि दूसरों की हिदायत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिदायत से कामिल तरीन एवं संपूर्ण है या दूसरों का फैसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फैसिले से बेहतर है या लोगों के अपने बनाये नियम तथा क़ानून इस्लामी शरीअ़त से अफज़ल या बराबर है या बीसवीं सदी मे इस्लामी दस्तूर , नियम तथा संविधान का लागु करना उचित नहीं है तो ऐसा आदमी दीन से बाहर हो जाए गा ।

5 - अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त में किसी भी चीज़ से कीना , नफरत तथा दुश्मनी रखना चाहे वह उस पर चल ही क्यों न रहा हो ।

अल्लाह तआ़ला फरमाता है :

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ

(यह इसलिए कि वह अल्लाह की उतारी हुई चीज़ से नाराज़ हुए,तो अल्लाह तआ़ला ने भी उन के अमल बरबाद कर दिये ।)सूरह मोहम्मद-9

6 - रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन में से किसी भी चीज़ या उसके सवाब या सज़ा का मज़ाक उड़ाना ।

अल्लल्लाह तआला फरमाता हैः

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ

[तौबा-65-66]

(कह दीजिए कि अल्लाह,उसकी आयतें और उसका रसूल ही तुम्हारी हंसी-मज़ाक के लिए बाकी रह गये हैं? तुम बहाने न बनाओ,बेशक तुम अपने ईमान लाने के बाद काफिर हो गये)

7- जादू करना या जादू द्वारा पति पत्नि में मुहब्बत पैदा करना या नफरत डालना या उन कामों से राज़ी रहना कुफ्र है

وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ

(वह दोनों भी किसी आदमी को उस वक़्त तक न सिखाते थे जब तक वे यह न कह दें कि हम तो एक इम्तेहान हैं तु कुफ्र न कर)सूरह बक़रः-102

8 - मुसलमानों के खेलाफ मुश्रिकों की मदद करना

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَتَّخِذُواْ ٱلۡيَهُودَ وَٱلنَّصَٰرَىٰٓ
أَوۡلِيَآءَۘ بَعۡضُهُمۡ أَوۡلِيَآءُ بَعۡضٖۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمۡ
فَإِنَّهُۥ مِنۡهُمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلظَّٰلِمِينَ

(ऐ **ईमानवाले !** तुम यहूदियों और ईसाईयों को मित्र न बनाओ,यह तो आपस में ही एक-दूसरे के मित्र हैं,तुम में से जो कोई भी इन से दोस्ती करे तो वह उन में से हैं,ज़ालिम को अल्लाह तआ़ला कभी भी हिदायत नही देता ।)सूरह मायेदः51

9 - इस बात का अकीदा तथा आस्था रखना की कुछ लोगों के लिऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की शरीअत से निकलना जायज़ है -

अल्लाह तआला का फरमान है :

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسلام دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ

(और जो (इंसान) इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज करे उसका दीन कुबूल नहीं होगा और वह आखिरत में घाटा उठाने वाले में होगा) सूरह आले-इमरान-85

10 - अल्लाह के धर्म से मुँह मोडना न ही उसे सीखना और न उस पर अमल करना |

अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ

(और उस से बढ़कर ज़ालिमम,अत्याचारी कौन है जिसे अल्लाह की आयतों से अवगत कराया गया ,फिर

भी उस ने उन से मुख फेर लिया,निश्चय ही हम भी पापियों से बदला लेने वाले है) सूरह सजदः22

इस्लाम से बाहर करने वाले काम जो ऊपर लिखे गये है इनमें से कुछ भी कोई करे मज़ाक के रूप में या हकीकत में या किसी चीज़ के डेर या देहशत से हो हर हाल में वह काफिर हो जाए गा । हाँ अगर किसी से ज़बरदस्ती उन में से कोई काम कराया जाये तो ऐसी स्थिति तथा हालात में वह इन्शाअल्लाह काफिर नहीं होगा ।

सचमुच यह सारे के सारे बहुत खतरनाक हैं प्रन्तु अफसोस रे अफसोस अधिक्तर इस्लामी समाज में मोजूद भी हैं । इस लिए मुसलमानो को चाहिए कि इन से बचें और अल्लाह की सज़ा तथा प्रकोप से डर खाऐं दीनी इल्म तथा ज्ञान और जानकारी से काम लें । ऐसी किताबों

को पढ़ा करें जिस से सही ज्ञान और जानकारी हासिल हो । क्यों कि हर चीज़ से पहले दीन का सही ज्ञान हासिल करना ज़रूरी है ।

जहालत वह बीमारी है जो आदमी को नष्ट तथा बरबाद कर देती है आज मुस्लिम समाज में कितने ऐसे गलत और असत्य आस्थाऐं ,अन्ध विश्वाश तथा अक़ीदे रायज हैं जिन की बुनियाद जहालत पर है,और आश्चर्य इस बात पर है कि संसार की चीजों में कोई जाहिल रहना पसन्द नहीं करता मगर वही आदमी दीन के कामों में बड़ी आसानी से जाहिल बन कर के अपनी सारी ज़िम्मेदारी दूसरों पर डाल देता है । जबकि हर इंसान अपने अपने अमल का ज़िम्मेदार है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि मौला तू तमाम लोगों को अपने अक़ीदे और अ़मल की सूधार करने की तौफीक़ दे तथा हमें शिर्क एवं कुफ़्र

से दूर रख अतः इस किताब के पढ़ने वालों को पूरा पूरा अच्छा फल दे । इसे उन के लिए हिदायत का साधन बना आमीन ।

आपका

अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी

इस्लामिक सेन्टर अहसा

(रचना)

विषय सूची	محتويات الكتاب
1- भूमिका 3	1ـ مقدمة المترجم 3
2-मनुष्यों के पैदा करने का मक़सद 12	2. الهدف من خلقنا 12
3-तौहीद की क़िस्में 17	3. أنواع التوحيد 17
4-गुनाहों मे सबसे बड़ा गुनाह 23	4. أعظم الذنوب 23
5-शिर्क अक़बर की कुछ क़िसमें 28	5. أنواع الشرك الأكبر 28
6-जादू का हुकुम 35	6. حكم السحر 35
7-छोटा शिर्क (शिर्क असगर) 39	7. الشرك الأصغر 39
8-तवस्सुल और उसकी किस्में 45	8. التوسل وأنواعه 45
9-दुआ और उसका होकुम 51	9. الدعاء حكمة 51
10-सूफियत तथा उसके खतरे और आशंकायें 57	10. الصوفية وخطرها 57
11- अल्लाह और उसके रसूल के फरमान के बारे हमारा विचा 62	11.موقفنا من قول الله ورسوله 62
12- क़ब्रों की ज़ियारत और उसके आदाब 67	12. زيارة القبور وآدابها 67
13- क़ब्रों पर सजदे करना और उसका तवाफ करना 73	13. السجود على القبور والطواف بها 73
14- अल्लाह की ओर बुलाने हुकुम 77	14. الدعوة إلى الله 77
15- इस्लाम से बाहर करदेने वाली चीज़ 80	15. نواقض الإسلام80